International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in March 2024, ISSN -2393-8048

पं. दीनदयाल उपाध्याय और एकात्म मानववाद: एक समग्र अध्ययन

डॉ. पूजा नायक, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, नेशनल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बड़हलगंज, गोरखपुर
प्रीति पाण्डेय, शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, नेशनल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बड़हलगंज, गोरखपुर, (संबद्ध दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

सारांश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एक प्रभावशाली भारतीय राजनीतिक विचारक के रुप में इन्होंने 1965 में एकात्म मानववाद दर्शन की शुरुआत किया। यह अध्ययन इसके मूलभूत सिद्धांतों, दार्शनिक आधारों और समकालीन प्रासंगिकता की समीक्षा करता है। एकात्म मानववाद मानव विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की अपेक्षा करता है, भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं को एकीकृत करता है, शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक आयामों में संतुलित विकास पर केन्द्रित होता है। यह अंत्योदय (हाशिए पर पड़े लोगों का उत्थान), व्यक्तिगत सम्मान और स्वदेशी संसाधनों और परंपराओं के सतत उपयोग पर विशेष बल देता है। एकात्म मानववाद पश्चिमी विकास प्रतिमानों के लिए एक विशिष्ट विकल्प प्रस्तुत करता है, जो एक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज को बढ़ावा देने के लिए समुदाय–संचालित विकास और आत्मनिर्भरता बनाने का प्रयास करता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद भारतीय समाज के लिए एक आदर्श मॉडल प्रस्तुत करता है जो समग्र विकास, सामाजिक न्याय, और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित है। यह शोध पत्र पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद सिद्धांत की गहन समीक्षा प्रस्तुत करता है और इसके विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करता है। इसके माध्यम से भारतीय समाज के विकास के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत की प्रस्तुति होती है, जो वर्तमान समय में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मुख्यबिन्दु– पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, समग्र विकास

भूमिका

भारतीय राजनीतिक विचार में एक प्रभावशाली व्यक्ति और भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य पंडित दीनदयाल उपाध्याय अपने एकात्म मानववाद के दर्शन के लिए प्रसिद्ध हैं। 1965 में व्यक्त की गई यह विचारधारा भारत के सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक विकास के लिए एक मार्गदर्शक ढांचे के रूप में कार्य करती है, जो इसकी सांस्कृतिक और पारंपरिक लोकाचार में गहराई से निहित है।एकात्म मानववाद विकास के प्रचलित पश्चिमी मॉडलों की प्रतिक्रिया के रूप में उभरा, जिसके बारे में उपाध्याय का मानना था कि वे भारतीय जीवन शैली के साथ असंगत थे। उन्होंने एक ऐसे मॉडल की कल्पना की जो व्यक्तियों की भौतिक व आध्यात्मिक आवश्यकताओं के बीच सामंजस्य स्थापित करता हो, विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को बढ़ावा देता हो जो आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों को एकीकृत करता हो। एकात्म मानववाद के मूल सिद्धांतों में समग्र विकास को बढ़ावा देना, स्वदेशी विकास मॉडल पर जोर देना, समाज के सबसे हाशिए पर पड़े वर्गों (अंत्योदय) का उत्थान, संतुलित विकास और व्यक्ति की गरिमा शामिल हैं। इन सिद्धांतों का सामूहिक उद्देश्य एक न्यायपूर्ण एवं समतापूर्ण समाज का निर्माण करना है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति का विकास राष्ट्र की समग्र समृद्धि में योगदान देता है।यह व्यापक अध्ययन एकात्म मानववाद के आधारभूत पहलुओं पर गहनता से चर्चा करता है, तथा इसके दार्शनिक आधार, व्यावहारिक अनुप्रयोगों और समकालीन भारतीय समाज में प्रासंगिकता की खोज करता है। उपाध्याय के कार्यों एवं भारतीय राजनीतिक विमर्श पर उनके प्रभाव की समीक्षा करते हुए प्रस्तुत अध्ययन इस बात की गहन समझ प्रदान करने का प्रयास करता है कि किस प्रकार एकात्म मानववाद भारत के लिए पश्चिमी विचारधाराओं से अलग एक अद्वितीय और सतत विकासात्मक प्रतिमान प्रस्तुत करता है। भारत के सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में एकात्म मानववाद के महत्व और देश की वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का समाधान करने की इसकी क्षमता पर प्रकाश डाला गया है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद दर्शन

20वीं सदी के मध्य में शुरू किया गया एकात्म मानववाद दर्शन भारतीय समाज में विकास और शासन के लिए एक अनूठा दृष्टिकोण है। यह मानव जीवन में आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास के महत्व पर केन्द्रित है, और एक संतुलित दृष्टिकोण की वकालत करता है जो विकास के सभी पहलुओं पर विचार करता है।यह दर्शन पूंजीवाद व समाजवाद के चरम को खारिज करता है, एक मध्यम मार्ग का प्रस्ताव करता है जो मानवीय गरिमा एवं लोक हित का सम्मान करता है। यह प्रत्येक व्यक्ति के आंतरिक मूल्य पर जोर देते हुए आत्मनिर्भरता एवं सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देता है। यह नैतिक

मूल्यों पर आधारित शासन की वकालत करता है, जिसका उद्देश्य एक न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज बनाना है। यह उन नीतियों का समर्थन करता है जो नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों का पोषण करते हुए भौतिक आवश्यकताओं को संबोधित करती हैं।यह एक ऐसी अर्थव्यवस्था की वकालत करता है जो समान संसाधन वितरण को बढ़ावा देते हुए आत्मनिर्भरता एवं स्थानीय आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है। यह उन सामाजिक संरचनाओं का भी समर्थन करता है जो समाज के सभी सदस्यों, विशेष रूप से हाशिए पर पड़े और वंचितों का समर्थन करती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रत्येक व्यक्ति को फलने–फूलने का अवसर मिले। यह दर्शन भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं के महत्व को बनाए रखता है और आधुनिक जीवन में उनके एकीकरण की वकालत करता है। यह सुझाव देता है कि सच्ची प्रगति में न केवल भौतिक संपदा बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक पूर्णता भी शामिल है, यह सुझाव देता है कि आध्यात्मिक रूप से जागरूक समाज समग्र विकास प्राप्त करने की अधिक संभावना रखता है। एकात्म मानववाद विकास के लिए विकेंद्रीकृत शासन और समुदाय–आधारित दृष्टिकोण का समर्थन करता है, जो पारंपरिक मूल्यों व नैतिक सिद्धांतों का सम्मान करते हुए समकालीन चुनौतियों को समझने और उनका समाधान करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है।

एकात्म जीवन की महत्ता

हमने सबसे छोटी इकाई, व्यक्ति पर जोर दिया है और उसे संगठित और एकीकृत किया है। जिस तरह से यहां व्यक्ति की व्यक्तित्व को संगठित और एकीकृत किया गया है, वह पश्चिम में नहीं है। वहां केवल भौतिक प्रगति को महत्व दिया गया है। सबसे प्रगतिशील राष्ट्र अमेरिका है। वहां कई लोगों ने भौतिक प्रगति हासिल की है, लेकिन यह आश्चर्यजनक है कि वहां आम आदमी में खुशी, संतोष और संतुष्टि की पूर्ण कमी है। वहां, व्यक्ति के जीवन में संघर्ष, असंतोष, अधिकतम अपराध और आत्महत्याएं देखी जाती हैं। वहां उच्च रक्तचाप (जो दुनिया में सबसे खराब है), हृदय रोग और आपराधिक प्रवृत्तियों में प्रगति हुई है। अमेरिका, जो पूरे विश्व को खरीदने की क्षमता रखता है, भौतिक समाधानों से मानसिक संतोष नहीं पा सका। आखिरकार, व्यक्ति का अंतिम लक्ष्य क्या है? खुशी–जो शाश्वत, केंद्रित (अनंत) है। सब कुछ करने के बावजूद, यूरोपीय देशों में संतोष और खुशी की कमी है। यीशु ने कहा था कि 'पूरे विश्व का साम्राज्य पाने का क्या फायदा, अगर आप आत्मा की खुशी खो देते हैं।' आज, पश्चिम में चांद के साम्राज्य के लिए दौड़ है लेकिन उन्होंने अपनी खुशी और संतोष खो दिया है। यहां, सबसे छोटी इकाई, व्यक्ति को भी संगठित और एकीकृत किया गया है। यहां, उसे हिस्सों में विभाजित करके समझने की बुद्धि नहीं दिखाई गई है। लेकिन एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक ने वर्णन किया है कि सड़कों पर हमेशा एक विशाल भीड़ होती है जो आत्माहीन, मानसिक रूप से अस्वस्थ, एक–दूसरे से अपरिचित और एक अलग स्थिति में होती है (दुनिया के प्रति उदासीन)। अगर वे खुद से समन्वय में नहीं हैं, तो दुनिया का क्या होगा? व्यक्ति का समाज के साथ समन्वय नहीं है। व्यक्ति भी एक संगठित और एकीकृत इकाई नहीं है। केवल भौतिक स्तर पर विचार करने के कारण, वहां व्यक्ति को एक शारीरिक और आर्थिक प्राणी माना गया। यदि भौतिक आर्थिक विकास की चोटी तक पहुंचने के बाद भी खुशी की कमी है, तो इसका कारण यह है कि वहां हिस्सों में सोचने की प्रणाली है, जिसमें व्यक्ति को केवल एक शारीरिक आर्थिक प्राणी माना गया है और व्यक्ति के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर संगठित और एकीकृत नहीं किया गया है।

एकात्म जीवन की अवधारणा व्यक्ति के जीवन के सभी पहलुओं में एकता और संतुलन को महत्व देती है। यह विचारधारा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिककृके बीच सामंजस्य स्थापित करने पर जोर देती है। एकात्म जीवन की महत्ता को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

- एकात्म जीवन व्यक्ति को आत्म–साक्षात्कार की दिशा में प्रेरित करता है। यह आत्मा की गहराई को समझने और अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने का अवसर प्रदान करता है।
- एकात्म जीवन में मानसिक, शारीरिक, एवं आध्यात्मिक पहलुओं का संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण होता है। यह संतुलन व्यक्ति को मानसिक शांति और स्वास्थ्य प्रदान करता है।
- एकात्म जीवन सामाजिक जीवन के महत्व को भी स्वीकार करता है। यह व्यक्ति को समाज के प्रति अपने कर्तव्यों व जिम्मेदारियों को समझने और उन्हें निभाने के लिए प्रेरित करता है।
- एकात्म जीवन आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन करता है। यह व्यक्ति को उच्चतर चेतना और आध्यात्मिक ज्ञान की ओर प्रेरित करता है।

- एकात्म जीवन मानवता और परोपकार के सिद्धांतों को बढ़ावा देता है। यह व्यक्ति को समाज एवं विश्व के प्रति संवेदनशील और सहयोगी बनाता है।
- एकात्म जीवन शारीरिक स्वास्थ्य और कल्याण को भी महत्व देता है। यह व्यक्ति को नियमित रूप से योग, ध्यान व स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करता है।
- एकात्म जीवन व्यक्ति को आंतरिक आनंद और संतोष की अनुभूति कराता है। यह बाहरी भौतिक सुखों से परे, आंतरिक शांति और संतोष को महत्व देता है।
- एकात्म जीवन पर्यावरण व प्रकृति के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता को बढ़ावा देता है। यह व्यक्ति को प्रकृति के साथ सामंजस्य में रहने और उसे संरक्षित करने के लिए प्रेरित करता है।

एकात्म जीवन की महत्ता इस तथ्य में निहित है कि यह व्यक्ति को संपूर्ण और समग्र दृष्टिकोण से जीने की प्रेरणा देता है, जिससे व्यक्ति न केवल स्वयं के लिए बल्कि समस्त समाज और विश्व के लिए भी सकारात्मक और कल्याणकारी योगदान कर सकता है।

दीन दयाल उपाध्याय: नये भारत के लिए परिवर्तन की दृष्टि

दीन दयाल उपाध्याय, एक प्रख्यात भारतीय दार्शनिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, इतिहासकार, पत्रकार और राजनीतिक कार्यकर्ता, "एकात्म मानववाद" की अपनी अवधारणा के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं, जो एक परिवर्तित और समृद्ध भारत के लिए उनके दृष्टिकोण को रेखांकित करता है। उनके विचार भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों में निहित सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करते हैं। नए भारत के लिए उनके दृष्टिकोण के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं। उपाध्याय का दर्शन मनुष्य के समग्र विकास पर जोर देता है, जिसमें भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण को एकीकृत किया जाता है। यह प्रगति के एक ऐसे सकारात्मक परिवेश की कल्पना करता है जो संतुलित विकास सुनिश्चित करते हुए व्यक्तिगत जरूरतों को सामाजिक लक्ष्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। उन्होंने एक ऐसे भारत की कल्पना की जो आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो। उन्होंने स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने और केंद्रीकृत संरचनाओं पर निर्भरता को कम करने के लिए सत्ता और संसाधनों के विकेंद्रीकरण के विचार को बढ़ावा दिया। उपाध्याय ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और नैतिक मूल्यों को संरक्षित करने के महत्व को बताया है। उनका मानना था कि आधुनिकीकरण पारंपरिक मूल्यों और प्रथाओं को त्यागने की कीमत पर नहीं आना चाहिए जिन्होंने भारतीय समाज को आकार दिया है। उन्होंने ऐसे समाज की वकालत की, जहाँ जाति, पंथ या आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना सभी व्यक्तियों के साथ सम्मान और गरिमा के साथ व्यवहार किया जाए। उनके दृष्टिकोण में हाशिए पर पड़े समुदायों का उत्थान और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देना शामिल था। उपाध्याय ने एक ऐसा आर्थिक मॉडल प्रस्तावित किया जो केवल औद्योगिक या जीडीपी वृद्धि के बजाय आम आदमी की भलाई पर केंद्रित है। उन्होंने लघु उद्योग, कृषि और सतत विकास पर जोर दिया। महात्मा गांधी से प्रेरणा लेते हुए उपाध्याय "स्वराज" की अवधारणा में विश्वास करते थे, जहाँ व्यक्तियों और समुदायों को खुद पर शासन करने और अपने जीवन को सीधे प्रभावित करने वाले निर्णय लेने की स्वायत्तता होती है। उनके दृष्टिकोण में एक मजबूत, एकजुट और संप्रभु भारत शामिल था जो वैश्विक शांति और समृद्धि में सक्रिय रूप से योगदान देता है। उन्होंने सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में राष्ट्रीय गौरव और एकता के महत्व पर जोर दिया। संक्षेप में, दीन दयाल उपाध्याय का एक नया भारत का दृष्टिकोण वह है जहाँ विकास समावेशी, टिकाऊ और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों में निहित है। उनके विचार समकालीन सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक प्रवचन को प्रभावित करते हैं, एक सामंजस्यपूर्ण और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण की दिशा में प्रयासों का मार्गदर्शन करते हैं।

समग्र विकास की ओर एकात्ममानववाद

भारतीय दार्शनिक और राजनीतिज्ञ दीनदयाल उपाध्याय द्वारा विकसित एकात्म मानववाद, विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण है जो आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहलुओं को जोड़ता है। यह व्यक्तिगत और सामूहिक विकास की अन्योन्याश्रयता पर जोर देता है, यह तर्क देते हुए कि सच्ची प्रगति तब प्राप्त होती है जब व्यक्तिगत विकास समुदाय की भलाई के साथ संतुलित होता है। यह दृष्टिकोण एक सामाजिक–आर्थिक मॉडल की वकालत करता है जो नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ भौतिक समृद्धि को संतुलित करता है। यह स्थानीय स्वायत्तता और आत्मनिर्भरता पर भी जोर देता है, समुदायों को अपने मुद्दों को संबोधित करने और विकास लक्ष्यों को आगे बढ़ाने की स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है। एकात्म मानववाद का उद्देश्य समाजवाद और पूंजीवाद के तत्वों को संतुलित करना, सामाजिक न्याय और समानता सुनिश्चित करते हुए आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देना है। यह एक ऐसे

समाज की कल्पना करता है जहाँ भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं को समान रूप से महत्व दिया जाता है, यह स्वीकार करते हुए कि अकेले आर्थिक प्रगति समग्र कल्याण को सुनिश्चित नहीं कर सकता है। संक्षेप में, एकात्म मानववाद का उद्देश्य प्रगति के लिए एक अधिक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण बनाना है।

दीनदयाल उपाध्याय द्वारा विकसित एकात्म मानववाद, विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य सामाजिक प्रगति के लिए मानव अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं को एक सुसंगत रणनीति में एकीकृत करना है। 20वीं सदी के मध्य में भारत में उत्पन्न, इसका उद्देश्य आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आयामों को संतुलित करना है, यह मानते हुए कि सच्ची प्रगति को केवल भौतिक संपदा के संदर्भ में नहीं मापा जा सकता है, बल्कि यह व्यक्तियों के नैतिक और आध्यात्मिक कल्याण को भी संबोधित करता है। यह दर्शन स्थानीय शासन और आत्मनिर्भरता के महत्व पर जोर देता है, समुदायों को अपने विकास की जिम्मेदारी लेने और जिम्मेदारी और सशक्तिकरण की भावना को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करता है। समाजवाद और पूंजीवाद के तत्वों को मिलाकर, एकात्म मानववाद एक ऐसा मॉडल बनाने का प्रयास करता है जो सामाजिक न्याय और समानता सुनिश्चित करते हुए आर्थिक दक्षता का समर्थन करता है। यह ऐसी नीतियों का आह्वान करता है जो नैतिक और सांस्कृतिक अखंडता के साथ–साथ भौतिक समृद्धि को बढ़ावा देती हैं। आज की वैश्वीकृत दुनिया में, एकात्म मानववाद तेजी से आर्थिक विकास और सांस्कृतिक समरूपता की चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। समग्र विकास और स्थानीय स्वायत्तता पर इसका जोर टिकाऊ और समावेशी समाज बनाने के लिए एक प्रासंगिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। आर्थिक प्रगति को सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के साथ एकीकृत करके, एकात्म मानववाद विकास के लिए एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो भौतिक सफलता को एक सार्थक और संतुलित जीवन शैली के साथ सामंजस्य स्थापित करता है।

एकात्ममानववाद उद्देश्य

एकात्ममानववाद पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एक दर्शन है, जिसका उद्देश्य एक संतुलित और समावेशी समाज की स्थापना करना है। इसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- मानव केंद्रित विकास: एकात्ममानववाद मानवीय मूल्यों को सर्वोच्च मानता है और विकास के प्रत्येक पहलू को मानव केंद्रित बनाने की ओर अग्रसर रहता है। यह आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक विकास को एक साथ लेकर चलता है।
- समाज के सभी वर्गों का समावेश: यह दर्शन समाज के सभी वर्गों, विशेषकर गरीब, वंचित, और पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य समाज में न्याय एवं समानता की स्थापना करना है।
- आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता: एकात्ममानववाद का लक्ष्य आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना है, ताकि हर व्यक्ति अपने जीवन यापन के साधन स्वयं जुटा सके और आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सके।
- सामाजिक समरसता: यह समाज में समरसता और आपसी सहयोग को बढ़ावा देता है। इसके तहत सभी जातियों, वर्गों, और समुदायों के बीच सामंजस्य व सद्भावना को प्रोत्साहित किया जाता है।
- नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण: एकात्ममानववाद नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित और संवर्धित करने पर बल देता है। यह हमारे प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर को आधुनिकता के साथ जोड़कर चलने की वकालत करता है।
- प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग: यह दर्शन प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग और संरक्षण करने की बात करता है, ताकि भावी पीढ़ियों के लिए भी संसाधन उपलब्ध रहें।

इन उद्देश्यों के माध्यम से एकात्ममानववाद एक ऐसे समाज की परिकल्पना करता है, जिसमें हर व्यक्ति का समग्र विकास हो सके और समाज में शांति, समृद्धि, एवं न्याय की स्थापना हो।

उपसंहार

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन एकात्म मानववाद, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सामंजस्यपूर्ण विकास पर जोर देकर भारतीय समाज के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने का लक्ष्य रखता है। यह भारत के सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों में निहित है और समग्र विकास, स्वदेशी मॉडल, हाशिए पर पड़े लोगों के उत्थान, संतुलित विकास और व्यक्ति की गरिमा पर केंद्रित है। यह दृष्टिकोण आर्थिक विकास से परे है और इसका उद्देश्य एक ऐसा समाज बनाना है जहाँ भौतिक,

सामाजिक और आध्यात्मिक जरूरतों को संतुलित तरीके से पूरा किया जाए, जिससे हर व्यक्ति का समग्र कल्याण सुनिश्चित हो। एकात्म मानववाद पश्चिमी विकास प्रतिमानों के लिए एक व्यवहार्य विकल्प प्रदान करता है जो सामाजिक और सांस्कृतिक कल्याण पर आर्थिक मापदंडों को प्राथमिकता देते हैं। यह आत्मनिर्भरता, स्थानीय संसाधनों और समुदाय–संचालित विकास की ओर लौटने का आह्वान करता है, जिससे भारतीय संदर्भ में एकता और उद्देश्य को बढ़ावा मिलता है। उपाध्याय के विचार एक समग्र दृष्टिकोण को प्रेरित करते हैं जो आर्थिक, सामाजिक और नैतिक आयामों को एकीकृत करता है, जो इसे नीति निर्माताओं और विचारकों के लिए एक प्रासंगिक संरचना प्रस्तुत करता है। इसमें, एकात्म मानववाद भारत के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण और व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो एक संतुलित और समावेशी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है, जो इसके लोगों के कल्याण और सम्मान को प्राथमिकता देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- उपाध्याय, दीनदयाल (1965), इन्ट्रीगल ह्यूमनिस्म, न्यू दिल्ली: भारतीय जनसंघ
- तिवारी, केवल (1991), पंडित दीन दयाल उपाध्याय: आडियोलाजी एण्ड प्रीसेप्शन, न्यू दिल्ली: प्रकाशन विभाग
- मिश्रा, डी.पी. (2003), दीनदयाल उपाध्याय: राष्ट्र जीवन की समग्र योजना, न्यू दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन
- कुलकर्णी, ए.आर. (1993), इन्ट्रीगल ह्यूमनिस्म: ए स्टडी आफ पंडित दीनदयाल उपाध्याय पालिटिकल थाट्स, न्यू दिल्ली: भारतीय विद्या भवन
- नेने, अनिर्बान (2006), "रीलेवेन्स आफ इन्ट्रीगल ह्यूमनिस्म इन कनटम्परोरी सोसाइटी" जर्नल ऑफ पॉलिटिकल स्टडीज,24(3), 153–169
- शर्मा, आर.पी. (2005), दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति और विचार, न्यू दिल्ली: साहित्य भारती
- पुखरामबम जूलिया चानू, डॉ. एल. बिस्वनाथ शर्मा(2022)"ए फिलासफिकल एक्पोजीशन आन द इकोनामिक थाट्स आफ पंडित दीनदयाल उपाध्याय", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड इंजीनियरिंग डेवलपमेंट रिसर्च (www-ijrti-org), आईएसएसएन:2455–2631,वाल्यू 7,नं 8,पीपी 122–125,
- पांडे, राजेंद्र. (2008), दीनदयाल उपाध्याय एण्ड द पालिटिक्स आफ वन नेशन, वाराणसी: गंगा पब्लिकेशन
- पंडित बी.एन.(1989), दीनदयाल उपाध्याय आडियोलाजी एण्ड प्रीसेप्शन: पालिटिक्स फार नेशन सेक, न्यू दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन
- डॉ. ज्योति सिंह और डॉ. परमिला(2021), इन्ट्रीगल ह्यूमनिस्म फिलासफी आफ पंडित दीनदयाल उपाध्याय, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करेंट रिसर्च वाल्यूम 13,नं, 12,पी..20142–20144,